४

# मालती जोशी के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ 'पटाक्षेप' 'राग-विराग' के संदर्भ में

**डॉ. राजेंद्रसिंह चौहाण**
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक, स्तानक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड.

हिन्दी की अग्रणी महिला कथाकार मालती जोशी गंभीर प्रकृति एवं आदर्श की मूर्ति है । बहुमुखी प्रतिभा की स्वामिनी मालती जोशी का समकालीन महिला कथाकारों मे विशेष स्थान है। इनके साहित्य में नारी अक्सर कथा का केंद्रीय पात्र रही है । मालती जोशी ने नारी मन की टूटनघूटन, अकेलापन और आक्रोश तथा स्वयं की निर्णय क्षमता को अपनी कहानियों में व्यक्त किया है । उनका साहित्य अधिकतर मध्यमवर्ग के घूटन को उजागर करता है ।

मालती जोशी का साहित्य यथार्थवादी साहित्य है। यथार्थवाद आधुनिकता की देन है। यह वाद वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखता है । यथार्थ वाद का जन्म सर्वप्रथम, दार्शनिक विचारधारा के रुप में हुआ । यथार्थ में चिन्तनऔर जीवन की सच्चाइयाँ होती है । उन्ही सच्चाइयों को सामाजिक धरातल पर मालती जोशी ने अपने कथा साहित्य में उजागर किया है। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में घटित होनेवाली हर घटना साहित्य के माध्यम से साकार रुप धारण करती है ।

सामाजिक यथार्थवाद के अन्तर्गत आदर्शवादी दृष्टिकोण समाप्त हो जाता है । इसकी सबसे बडी माँग है कि बिना किसी भय, संकोच के प्राप्त अनुभवों के आधार पर चारों ओर के परिवेश का ईमानदारी से वर्णन करना । ये रुढियों एवं अंधविश्वासों वर्ग के प्रति अनास्था का भाव रखता है । इसकी सीमाओं में उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक सभी व्यक्तियों का चित्रण होता है । इसमें सामाजिक जीवन का अस्तित्व अनिवार्य है । हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान के अनुसार "सामाजिक यथार्थवाद अन्य यथार्थवादों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ एवं विकासोन्मुख है । इसके द्वारा जीवन व समाज में अधिकाधिक संतुलन एवं समन्वय स्थापित किया जा सकता है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के अभिन्न एवं अनिवार्य अंग है । एक का हित दूसरे के विकास पर अवलंबित है । सामाजिक यथार्थवाद समाज को आर्थिक



Scanned by CamScanner